

---

Rishi Agastyapuktam Shivapujasadhanani 4 Shivarchane  
Ghritakambalarpanopadesham

ऋषि अगस्त्यप्रोक्तं शिवपूजासाधनानि ४ शिवार्चने  
घृतकम्बलार्पणोपदेशम्

Document Information

---

Text title : Rishi Agastyapuktam Shivapujasadhanani 4 Shivarchane Ghritakambalarpanopadesham

File name : shivapUjAsAdhanAni4shivArchaneghRRitakambalArpaNopadesham.itx

Category : shiva, shivarahasya, puja, upadesha, advice

Location : doc\_shiva

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shrIshivarahasyam | ugrAkhyah saptamAMshaH | adhyAyaH 26

kumbhaghoNamahimAnuvarNanam | 180-190||

Latest update : June 16, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 16, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

ऋषि अगस्त्यप्रोक्तं शिवपूजासाधनानि ४ शिवार्चने  
घृतकम्बलार्पणोपदेशम्



(शिवरहस्यान्तर्गते उग्राख्ये)

विप्र उवाच

कथं कुम्भज कर्तव्यं शिवाय घृतकम्बलम् ।  
तत्सर्वं वद सर्वज्ञ वेदशास्त्रविशारद ॥

अगस्त्यः (उवाच)

सितानामसितानां च गवामेव घृतं नवम् ।  
वस्त्रसंशोधितं ग्राह्यं प्रस्थं सार्धशतत्रयम् ॥

शोधितेष्वेव पात्रेषु तत्प्रक्षिप्य घृतं नवम् ।  
रक्षणीयं प्रयत्नेन घनीभावावधिद्विज ॥

माघे मासि ततः सायं पौर्णमास्यां निशामुखे ।  
अभिषिच्य ततो देयं घनीभूतं वृतं शिवे ॥

ततो दीपादिकं दत्त्वा नैवेद्यं च प्रयत्नतः ।  
पुनर्धूपादिकं देयं पुनः पूजां प्रकल्पयेत् ॥

पुराणवचनैः कार्यं ततो जागरणं निशि ।  
भोजनीयोस्ततः प्रातः शैवाः स्वादुरसायनैः ॥

महाकम्बलमेतत्तु वृतस्य परिकीर्तितम् ।  
एतत्पूजा परापूजा नास्ति गौरीपतेद्विज ॥

घृतकम्बलपूजा तु स्वस्वशक्त्याऽपि शक्तिः ।  
(स्वस्वशक्त्यनुसारतः)

माघमासि प्रयत्नेन कर्तव्या मुक्तिकाङ्क्षिभिः ॥

कम्बलार्धं तदर्धं वा तदर्धं वा प्रयत्नतः ।

कर्तव्यं श्रीमहेशाय तनुं प्राप्य द्विजैद्विज ॥

एवं यः कुरुते मर्त्यो महेशे घृतकम्बलम् ।

स सर्वपापनिर्मुक्तः शिवलोकं गमिष्यति ॥

यं यं कामयते कामं यः कृत्वा घृतकम्बलम् ।

तं तं काममवाप्नोति स मोक्षमधिगच्छति ॥

॥ इति शिवरहस्यान्तर्गते ऋषि अगस्त्यप्रोक्तं शिवपूजासाधनानि ४ - शिवार्चने  
घृतकम्बलार्पणोपदेशं सम्पूर्णम् ॥

- ॥ श्रीशिवरहस्यम् । उग्राख्यः सप्तमांशः । अध्यायः २६ कुम्भघोणमहिमानुवर्णनम् । १८०-  
१९० ॥

- .. shrIshivarahasyam . ugrAkhyah saptamAMshaH . adhyAyaH 26 kumbhaghonaMahimAnuvarNa  
. 180-190..

Notes:

Rṣi Agastya ऋषि अगस्त्य delivers Upadeśa उपदेश (to Dvija द्विज) about offering of the  
Ghṛtakambalam घृतकम्बलम् with respect to worship of Śiva शिव.

Ghṛtakambalam घृतकम्बलम् offering is specified for Māgha māsa माघ मास at night of  
commencement of Māgha Pūrṇimā माघ पूर्णिमा. The merits of worshipping Śiva शिव  
Ghṛtakambalam घृतकम्बलम् procedure finds detailed mention in the Kāmika Āgama  
कामिक आगम.

The Adhyāyaḥ 26 अध्यायः २६ has several other details about Śivapūjāsādhanaṇi  
शिवपूजासाधनानि.

Proofread by Ruma Dewan

---

Rishi Agastyaprotam Shivapujasadhanani 4 Shivarchane Ghritakambalarpanopadesham

pdf was typeset on June 16, 2024

---

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

